

जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ॥

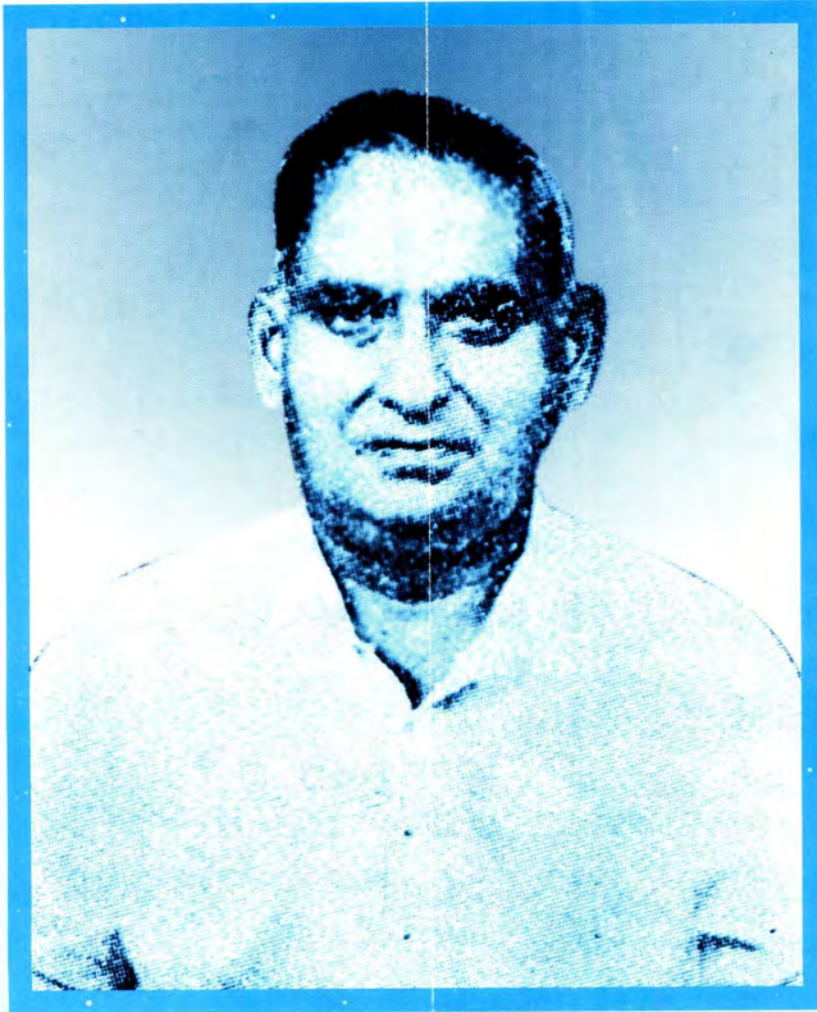
॥ ओ३म् ॥

वर्ष - ५९ अंक - ११
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : (१००) रु०
आजीवन - (१०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

कार्तिक-मार्गशीर्ष : सम्वत् २०७४ वि०

नवम्बर - २०१७



डॉ० श्रीकान्तजी उपाध्याय

विशेष विवरण पृष्ठ २० पर

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

आर्य समाज कलकत्ता का १३२वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता-७००००६ का १३२वाँ वार्षिकोत्सव शनिवार २३ दिसम्बर से रविवार ३१ दिसम्बर २०१७ पर्यन्त हृषीकेश पार्क (निकट-सिटी कॉलेज) आम्हर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता-९ में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जायेगा जिसमें प्रतिदिन प्रातः **सामवेद पारायण यज्ञ**, अपराह्न व सायंकाल विभिन्न सम्मेलन तथा सायंकालीन सत्र में आमन्त्रित वैदिक विद्वानों के विभिन्न विषयों पर सारगर्भित उपदेश व भजन होंगे।

आमन्त्रित विद्वत्गण

स्वामी आर्यवेशजी
(दिल्ली)

आचार्य सोमदेव शास्त्री
(परोपकारिणी सभा - अजमेर)

श्रीमती प्रियंका भारती
(भरतपुर)

मुख्य कार्यक्रम

प्रतिदिन प्रातः	७.३० बजे से ९.३० बजे तक	सामवेद पारायण यज्ञ
प्रतिदिन प्रातः	९.३० बजे से १०.३० बजे तक	भजन व उपदेश
प्रतिदिन प्रातः	१०.३० बजे से १२.०० बजे तक	बंग-भाषा कार्यक्रम
प्रतिदिन सायं	४.०० बजे से ६.०० बजे तक	बंग-भाषा कार्यक्रम
प्रतिदिन सायं	६.०० बजे से ९.३० बजे तक	संध्या, भजन व व्याख्यान
२३ दिसम्बर २०१७	अपराह्न २ बजे से ५ बजे तक	विशाल एवं सुसज्जित शोभा यात्रा
२४ दिसम्बर २०१७	पूर्वाह्न १०.३० बजे से १२ बजे तक	सामूहिक सत्संग
	अपराह्न ३ बजे से ५.३० बजे तक	रघुमल आर्य विद्यालय का कार्यक्रम
	सायं ५.३० बजे से ६.३० बजे तक	आर्य कन्या महाविद्यालय का कार्यक्रम
	सायं ६.३० बजे से ९.३० बजे तक	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
२५ दिसम्बर २०१७	अपराह्न ३ बजे से ५.३० बजे तक	बाल सत्संग
	संध्या ७ बजे से ९.३० बजे तक	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
२६ दिसम्बर २०१७	सायं ६ बजे से ९.३० बजे तक	आर्य संस्कृति सम्मेलन
२७ दिसम्बर २०१७	अपराह्न २ बजे से ५ बजे तक	महिला सम्मेलन
	सायं ६ बजे से ९.३० बजे तक	सन्ध्या, भजन, प्रवचन
२८ दिसम्बर २०१७	सायं ६ बजे से ९.३० बजे तक	सन्ध्या, भजन, प्रवचन
२९ दिसम्बर २०१७	सायं ६ बजे से ९.३० बजे तक	वेद सम्मेलन
३० दिसम्बर २०१७	सायं ६ बजे से ९.३० बजे तक	सन्ध्या, भजन, शंका समाधान सायंकाल अधिवेशन
३१ दिसम्बर २०१७	प्रातः १० बजे से १.३० बजे तक	सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सामूहिक सत्संग, ऋषि लंगर
	अपराह्न ३ बजे से ५ बजे तक	गुरुकुलीय कार्यक्रम
	सायं ६ बजे से ८.३० बजे तक	सन्ध्या, भजन, प्रवचन एवं धन्यवाद ज्ञापन

दृष्टव्यः • कार्यक्रम में परिवर्तन का अधिकार सुरक्षित है।। ऋग्वेद पारायण यज्ञ में यजमान बनने के लिए कृपया आर्य समाज के कार्यालय से सम्पर्क करें।

सुरेशचन्द्र जायसवाल

प्रधान

०९४३३१३८९००

दीपक आर्य

मन्त्री

०८९६१७७४९४०



ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५९ अंक — ११
कार्तिक-मार्गशीर्ष २०७४ वि०
दयानन्दाब्द १९३
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८
नवम्बर — २०१७



आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय

शुल्क : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ	२
२. इस अंक की प्रस्तुति	३
३. पशु पथ त्यागो (५७)	वेद-वीथिका से ४
४. स्वामी जी का स्वकार्थित जीवन-चरित्र	पं० लेखराम द्वारा संकलित ७
५. ईश्वर की अवधारणा	राजेन्द्र प्रसाद आर्य ९
५. सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा (महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का काव्यानुवाद)	पं० देवनारायण तिवारी १२
६. काम आये सर्वदा शुभकामनायें	देवनारायण भारद्वाज १४
७. ब्रह्मांड में जीवन का अस्तित्व	परीक्षित मंडल 'प्रेमी' १७
७. डॉ० श्रीकान्तजी उपाध्याय	२०
८. पूर्णता की ओर अग्रसर हम सब	पं० उम्मेद सिंह 'विशारद' २१
९. हिमाचल के राजभवन में दो दिन	ज्ञानेश्वराय २४
१०. सूचना	२६

आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६

दूरभाष : २२४१-३४३९

email : aryasamajkolkata@gmail.com

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा।

पशु-पथ त्यागो

उलूकयातुमुत् शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत् कोकयातुम् ।

सुपर्णयातुमुत् गृध्रयातुं दृषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्रः ॥

अथर्व ८-४-२२

शब्दार्थ :-

उलूकयातुम्	=	उल्लू का मार्ग, अज्ञान, अन्धकार से प्यार
शुशुलूकयातुम्	=	भेड़िये की चाल, क्रूरता, धोखा का मार्ग
जहि	=	त्याग दो
श्वयातुम्	=	कुत्ते की चाल, चापलूसी और डाह का मार्ग
कोकयातुम्	=	चकवा, चिड़े की चाल, कामातुरता
सुपर्णयातुम्	=	गरुड़, नीलकण्ठ का मार्ग अहंकार का मार्ग
उत्	=	और
गृध्रयातुम्	=	गीध की चाल, लोभ लालच का मार्ग
दृषदेव	=	(दृषदा-इव) सिल-चक्की की भांति
प्रमृण	=	मसल दो, पीस दो
रक्ष	=	रक्षा करो
इन्द्र	=	ऐश्वर्यशाली मनुष्य

भावार्थ :- हे मनुष्य ! तुम इन्द्र हो, ऐश्वर्यशाली हो । तुम अपनी रक्षा करो । तुम अपनी रक्षा के लिए उल्लू, भेड़िया, कुत्ता, चकवा, गरुड़ और गीध की चाल त्यागकर, इन दुर्गुणों को मसलकर अपनी रक्षा करो ।

विचार विन्दु :

१. पशुपथ और मनुष्य पथ तथा मनुष्यपथ की विशेषता ।
२. गिनाये गये पशुओं के पथ से सावधानी ।
३. इन्द्र का इन्द्रपन क्या है ?
४. पशुपथ से रक्षा कैसे हो ?

व्याख्या

प्रस्तुत मंत्र में पशु-पथ, पशुओं का मार्ग छोड़ने और मनुष्य पथ पर चलने का उपदेश है। पशुओं का जीवन उनकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों से चलता है। पशु योनि भोग-योनि हैं। उसमें स्वाभाविक प्रेरणा (Impulse Instinct) होती है। पशु कर्म करने में न स्वतंत्र होते हैं और न उन्हें कर्मों का फल मिलता है। पशु अपने मनोविकारों के, अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के दास होते हैं। दूसरी ओर मनुष्य मननशील होता है। मननशीलता मनुष्यता की परिभाषा है। कहा गया है —

‘मननात् मनुष्यः’, जो मननशील हो वह मनुष्य है और जो मननशीलता को छोड़कर अपने मनोविकारों का दास हो वह मनुष्य नहीं पशु-तुल्य है। मनुष्य कर्म-योनि और भोग-योनि का प्राणी है। वह अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी है। इस मंत्र में छः पशुओं को गिनाया गया है और मंत्र में उपदेश दिया गया है कि हे मनुष्य ! तुम इन पशुओं के मार्ग को त्याग कर मननशील मार्ग पकड़ो। ये छः पशु हैं, छः दुर्गुणों के प्रतीक हैं, इन दुर्गुणों को छोड़कर मननशील होकर जीना चाहिए, तभी मनुष्यता सफल होती है —

(१) **उल्लू-** उल्लू अन्धकार प्रिय प्राणी है। यह छिप कर घात करता है। यह सामने से नहीं लड़ता। महाभारत के युद्ध में अश्वत्थामा ने पाण्डवों के शिविर पर रात को उस समय आक्रमण किया था जब सब निश्चिन्त सो रहे थे। उल्लू रात को ही आक्रमण करता है। उल्लू प्रकाश से दूर रहता है। उल्लू की प्रवृत्ति वाला मनुष्य ज्ञान, सत्संग, स्वाध्याय से दूर रहता है। ऐसे मनुष्यों का मन न स्वाध्याय में लगता है, न सत्संग में, स्वाध्याय में नींद आती है, सत्संग में वे बैठ नहीं सकते।

(२) **शुशुलूक भेड़िया-** भेड़िया क्रूरता और क्रोध का प्रतिनिधि है। यह अपने से निर्बलों पर आक्रमण करता है। कहते हैं—

‘सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।

मन्त्रौषधवशः सर्पः खलः केन निवार्यते।’

कहते हैं सर्प क्रूर है, दुष्ट भी क्रूर होते हैं लेकिन सर्प से अधिक क्रूर दुष्ट होता है। सर्प की दवा है किन्तु दुष्ट की, क्रूर की कोई दवा नहीं। अतः मनुष्य को भेड़िया का मार्ग क्रूरता को छोड़ देना चाहिए।

(३) **कुत्ते का मार्ग-** कुत्ता डाह, चापलूसी और जाति-द्रोह का प्रतीक है। कुत्ता कुत्ते को

देखकर भौंकने लगता है । कहते हैं कुत्ता कुत्ते को देखकर गुरगुराता है । कुत्ता इतना चापलूस है कि रोटी का टुकड़ा देने वाले के पैरों पर लोट कर कूंकूंक करता है, दुम हिलाता है, पेट दिखाता है ।

‘लांगूल चालन मधश्चरणावपातम् ।

भूमौ निपत्य वदनोदर दर्शनञ्च ।

श्वा पिण्डस्य कुरुते, गजपुंगवस्तु,

धीरं विलोकयति चाटुशतानि भुङ्क्ते ॥’

किन्तु कुत्ता ऐसा जाति-द्रोही है कि उसकी गली में बाहरी कुत्ता आ जाये तो उसे काट खाने दौड़ता है । मनुष्य को इन दुर्गुणों को त्याग देना चाहिए ।

(४) कोक का मार्ग- कोक है चकवा, चिड़ा । यह महा कामी है । कहते हैं कामी व्यक्ति दिन-रात अन्धा रहता है —

‘दिवा पश्यति नोलूकः काको नक्तन्न पश्यति ।

अपूर्वः कोऽपिकामान्धो दिवा नक्तन्न पश्यति ॥’

अर्थात् उल्लू को दिन में नहीं दिखता, कौवे को रात में नहीं दिखता, किन्तु कामी व्यक्ति रातों-दिन अन्धा बना रहता है । मनुष्य को कामातुरता का पथ छोड़ देना चाहिए ।

(५) सुपर्ण- गरुड़, नीलकण्ठ- गरुड़ महा अहंकारी पक्षी है और अहंकारी का सिर सदा नीचा हो जाता है । मनुष्य को अहंकार का मार्ग भी त्याग कर जीना चाहिए ।

(६) गिद्ध- गीध का दुर्गुण लोभ है और लोभ से कामज और क्रोधज सभी दोष उत्पन्न होते हैं । अतः गिद्ध का मार्ग भी छोड़ देना चाहिए ।

मंत्र में कहा है, हे मनुष्य ! तू इन्द्र है, अपनी इन्द्रियों का स्वामी है । तू ऐश्वर्य का देवता है । यदि मनुष्य इन्द्रियों के वश में हो जाता है तो उल्लू, कुत्ता, गिद्ध आदि पशुओं की श्रेणियों में चला जाता है । मनुष्य यदि पशु-प्रवृत्ति को त्याग दे, पशु-पथ छोड़कर अपनी इन्द्रियों पर संयम कर लें तो सचमुच पशुता को त्याग कर मनुष्य इन्द्र बन जाता है । मंत्र का सन्देश है कि हे मनुष्य ! भगवान् ने तुझे इन्द्र बनाया है, तू ऐश्वर्य का देवता है । अपनी इन्द्रियों पर संयम करके तू सचमुच ऐश्वर्य का देवता इन्द्र बन जा ।



महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन वृत्त

अध्याय-१

पुष्कर के मेले का वृत्तान्त

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को गुजरात में सम्बत् १८८१ में हुआ था। पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया जाता है। इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता ने निर्णय किया कि पं० लेखराम द्वारा संकलित एवं आर्य महामहोपदेशक कविराज श्री रघुनन्दन सिंह निर्मल द्वारा अनूदित महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र धारावाहिक प्रकाशित किया जाय, इसी शृंखला में प्रस्तुत है यह धारावाहिक जीवन-चरित्र — सम्पादक

(गतांक से आगे)

अजमेर में प्रथम बार

तपस्वियों के अहं की परीक्षा – उन्हीं दिनों दो तपस्वी नवयुवक कृष्णवर्ण के नाग पहाड़ के जंगल से स्वामी जी से मिलने को आये। जो संस्कृत के अतिरिक्त हमारी भाषा नहीं बोलते थे और कदाचित् जानते भी न थे। उनकी दूसरी भाषा मराठी या तैलगू थी, जिसे वे जानते थे परन्तु बहुत कम। हमने उनसे एक बात उर्दू में पूछी जिसको उन्होंने समझ तो लिया परन्तु उत्तर संस्कृत में दिया जिसका अर्थ स्वामी जी ने हमको बताया था। ये तपस्वी दो बार आये थे। एक बार उन्होंने कहा कि महाराज! हम तो बड़े शान्त हैं। स्वामी जी ने कहा कि नहीं, अभी अहंकार को नहीं जीता। उन्होंने कहा कि हाँ जीत लिया है। जिस पर स्वामी जी ने अपने ब्रह्मचारी को संकेत से कुछ समझा दिया। जब वह बाहर निकले तो किसी बात पर उन साधुओं से उसने झगड़ा करके उन्हें पकड़ लिया और आपस में कुश्ती हो गई। जिस पर उसने उनको और उन्होंने उसको पछाड़ा। उनकी गड़बड़ सुनकर हमलोग बाहर निकले और स्वामी जी ने भी उनको समझाया और पृथक् किया और उनको फिर अन्दर बुलाया और संस्कृत में समझाया कि हम कहते थे कि तुमने अहंकार नहीं जीता जिस पर उन्होंने क्षमा मांगी और नमो नारायण करके चले गये। हम भी उन दिनों नमो नारायण करते थे और स्वामी जी नारायण का उत्तर देते थे। हम दो बार मिले और दोनों बार जिज्ञासु बनकर स्वामी जी से भक्ति का मार्ग सीखते रहे।

हम गद्दी नहीं, शास्त्रार्थ मांगते हैं, रामनाम पर आक्षेप – अजमेर में दरवाजे के बाहर राम स्नेहियों के गुरु रहते थे। वहाँ बाग में ही स्वामी जी ने एक दिन सुना कि (वे) कुछ साक्षर हैं। तब मुझे उनके पास भेजा। हमने जाकर कहा कि स्वामी जी आपसे मिलना चाहते हैं और शास्त्रार्थ करेंगे। उन्होंने उत्तर दिया कि हम शास्त्रार्थ नहीं कर सकते। मैंने कहा कि क्या कारण है तो बोले कि हम किसी के स्थान पर नहीं जाते और यदि यहाँ आवें तो हम उत्थानिका अर्थात् गद्दी से उठकर किसी का सम्मान नहीं करते। मैंने यह वृत्तान्त जाकर स्वामी जी से कहा। उन्होंने कहा कि वह जो कहते हैं कि हम गद्दी

से नहीं उठते, मत उठें और न हमको गद्दी दें हम उनसे गद्दी नहीं मांगते प्रत्युत शास्त्रार्थ माँगते हैं । हमने फिर जाकर कहा तो वह बोले कि बाबा ! हम तो राम-राम करते हैं, कुछ शास्त्रार्थ नहीं जानते । मैंने स्वामीजी से कहा, स्वामी जी ने कहा कि तुम यह चिट्ठी जाकर दे दो और उत्तर लाओ । स्वामी जी ने यह चिट्ठी संस्कृत में लिखी थी जिसमें भागवत और रामनाम पर कई आक्षेप किये थे । उन्होंने चिट्ठी लेकर कहा कि अच्छा इस चिट्ठी का उत्तर मैं कल आपको दूँगा परन्तु कल उत्तर तो क्या वह दूसरे दिन प्रातःकाल ही वहाँ से बोरिया-बिस्तर बांध कर भाग गये । शाहपुर की गद्दी के सबसे बड़े महन्त वही थे ।

फिर वहाँ देहली के एक पण्डित जो हरिश्चन्द्र जी के गुरुभाई थे, उनसे शास्त्रार्थ हुआ । मनुस्मृति और उपनिषदों के प्रमाणों पर शास्त्रार्थ होता रहा जिससे वह बहुत प्रसन्न हुए । एक दिन का निमंत्रण भी दिया ।

जैनियों में से कई लोग आते थे । एक बच्चूलाल सरावगी थे, उन्होंने तीन दिन महाराज से शास्त्रार्थ किया । अन्त में उसने नमस्कार करके कहा कि आप जो कहते हैं वह यथार्थ है । धन्नालाल व अमृतसिंह आदि जैनी लोगों से भी चर्चा हुई । धन्नालाल ने उससे कुछ प्रश्न किये थे, स्वामी जी ने उसका कागज या पुस्तक रख ली थी कि तुम फिर यहाँ आना क्योंकि तुम नास्तिक हो, हम तुम्हें भली भाँति हृदयंगम करावेंगे । वह फिर सामने तो न आया परन्तु डिप्टी कमिश्नर साहब बहादुर के पास जाकर प्रार्थना पत्र दिया । उन्होंने राय दौलतराम साहब मुख्य अमीन से कहा कि इसकी पुस्तक दिलवा दो उन्होंने आनकर दिला दी । परन्तु धन्नामल फिर न तो कुछ उत्तर दे सका और न सामने आया ।

स्त्रियों को उपदेश नहीं करते थे, शिवमूर्ति का खण्डन और केवल शिव का उपदेश करते थे-
ला० मूलचन्द ने कहा कि इसी समय का वर्णन है कि बाग में हम कुछ मनुष्य स्वामी जी के पास बैठे हुए थे । अकस्मात् कुछ स्त्रियाँ आ गई । चूँकि वह मार्ग में थे वह भी दर्शन को आ गई । स्वामी जी ने पूछा कि माइयों ! कहां गई थी ? उन्होंने कहा कि रामस्नेही साधुओं के पास गई थी । स्वामी जी ने पूछा कि क्यों गई थी ? उन्होंने कहा कि यदि आप कहें तो आपके पास आ जाया करें । स्वामी जी ने कहा कि हमारे पास तुम्हारा क्या प्रयोजन ? उन्होंने कहा कि हम कुछ उपदेश लेना चाहती हैं । स्वामी जी ने कहा कि यदि तुम्हारा यही प्रयोजन है तो हम तुमको उपदेश नहीं कर सकते, अपने पतियों को भेज दो, उनको उपदेश करेंगे तुम्हारे को उपदेश नहीं कर सकते । स्त्री को उपदेश नहीं करते थे और न पास आने देते थे । जती-सती व्यक्ति थे । उस समय मूर्तिपूजा का निषेध करते और शिव की मूर्ति का खंडन करते थे । केवल शिव का उपदेश करते थे ।

पंडित वृद्धिचन्द्र ने कहा कि अजमेर में भी स्वामी जी ने कंठिया उतरवाई थी । अजमेर के समीपस्थ स्थान सावर के ठाकुर साहब भी स्वामी जी से अजमेर में मिलने आते थे और स्वामी जी के उपदेश से उन्होंने कंठी उतार दी थी । अजमेर में छः मनुष्यों की रसोई हुआ करती थी । एक बूढ़ा नब्बे वर्ष का संस्कृतज्ञ ब्रह्मचारी जिसकी भवे श्वेत थीं स्वामी जी के पास अजमेर में रहता था ।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

ईश्वर की अवधारणा

— राजेन्द्र प्रसाद आर्य

आज सदियों से लोगों में इस बात की वहस छिड़ी हुई है कि क्या ईश्वर है अथवा नहीं। जिस वजह से मानव समुदाय आज दो वर्गों में विभाजित हो गया है। एक बड़ा वर्ग वो है जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता है वहीं दूसरा वर्ग वो है जो मानता है कि ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है और संसार में जो कुछ भी हो रहा है वो अपने आप ही हो रहा है और इनकी संख्या भी करोड़ों में है।

यहाँ हम न तो धर्म ग्रन्थों का सहारा ले रहे हैं और न ही कोई तर्क वितर्क बल्कि कुछ तथ्यों को प्रस्तुत कर रहे हैं, देखना होगा कि ये तथ्य किस ओर इशारा कर रही हैं.....

आज दुनियाँ में अरबों-खरबों लोग हैं और इसके पूर्व में भी अरबों-खरबों लोग पैदा हुए और मर भी गए, आगे भी कितने अरबों-खरबों लोग पैदा होंगे पर कितना बड़ा आश्चर्य है कि इनमें से किसी का भी चेहरा किसी अन्य से नहीं मिलता है, यानि सबके चेहरे अलग अलग प्रकार के हैं, यहाँ तक कि जुड़वा बच्चों में भी बहुत अधिक समानता होते हुए उनमें भी कुछ अन्तर होता है जिसे उसकी माँ अवश्य ही जानती है। यहां पर यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि वो कौन है ? जो हर किसी का एक दूसरे से अन्तर बनाये रखता है। उनका सिर्फ चेहरा ही नहीं उनकी आवाज भी अलग-अलग प्रकार की होती है और सिर्फ आवाज ही नहीं उनके फिंगर प्रिन्ट भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं। यहाँ पर थोड़ी देर के लिए कल्पना किया जा सके कि उनके चेहरे अलग-अलग प्रकार के न होकर सिर्फ दो प्रकार के हो, पहला मर्दों के लिए अलग और महिलाओं के लिए अलग तो फिर क्या होगा और उनकी आवाजें भी अलग-अलग प्रकार की न होकर एक ही प्रकार की हो तो कितनी बड़ी अव्यवस्था फैल जायेगी। पर ऐसा न होकर अलग-अलग प्रकार की है। निर्माण करने वाले को इसका पूर्वानुमान था, इसी से पता चलता है कि वो कितना बड़ा दूरदर्शी भी है। सिर्फ मनुष्य का चेहरा ही नहीं बल्कि जानवरों का चेहरा भी अलग-अलग प्रकार का होता है तभी तो हजारों भेड़ों की झुण्ड में भी भेड़ का बच्चा अपनी माँ को ढूँढ लेता है और उसका ही दूध पीता है।

प्रकृति में भी हजारों प्रकार की वनस्पतियों की प्रजातियाँ होती हैं पर हर वनस्पति के पत्ते, फूल और फल अलग-अलग प्रकार के होते हैं, सबका रूप, रस, गंध और स्वाद भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं क्या रहस्य है ?

ईश्वर को जानने के लिए बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। हम निर्माणकर्ता की सबसे अनुपम कृति इस मानव शरीर को देखे तो पता चलेगा कि कितनी ही बुद्धिमत्ता पूर्वक इसकी संरचना की गई है। विज्ञान का विषय है कि कर्त्ता के बिना किसी क्रिया का सम्पादन नहीं होता है और न ही निर्माण। निर्माण है तो कोई निर्माणकर्त्ता भी होगा, रचना है तो कोई रचनाकार भी होगा। ऐसा बिल्कुल संभव नहीं कि निर्माता है मगर निर्माणकर्त्ता नहीं हो। तो आइए थोड़ा देखें कि इस मानव शरीर निर्माण

में कितनी बुद्धिमत्ता पूर्वक कौन-कौन सी चीजें प्रदान किया गया है....

चमड़ी से ढका मानव शरीर बिना सूई-धागे के किस प्रकार से सिया गया है कि पता ही नहीं चलता । मानव शरीर में ३६ लीटर पानी रहता है, इसमें चीनी १ किलो अमोनिया २ किलो, नमक १५० ग्राम, लोहा इतना कि अगर जमा किया जाय तो २ इंच मोटी कील बन सकती है, गन्धक इतना कि १०० दिया सलाई की तीलियाँ बनाई जा सकती है, चर्बी इतना कि इससे ७ साबुन की टिकिया बनाई जा सकती है । ७२ करोड़ ७२ लाख १० हजार ११० नस नाड़ियों का जाल शरीर के कोने-कोने में फैला हुआ है । आजतक आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी इसकी गिनती नहीं कर सका है ।

सवाल है कि मानव शरीर में ३६ लीटर पानी किसने और क्यों सुनिश्चित की है क्योंकि पानी की मात्रा अगर बढ़ जाय तो भी परेशानी और अगर कम हो जाय तो जान पर बन जाती है इसलिए तुरंत ही बाहर से पानी चढ़ाया जाता है । इसी प्रकार से अन्य चीजों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है ।

आगे देखिए मानव शरीर में १ मिनट — १६-१७ श्वासों निरन्तर चल रही है । यह दिल २४ घंटे में १ लाख १३ हजार बार धड़कता है । इस प्रकार यह पूरे जीवनकाल में करोड़ों बार धड़कता होगा और फिर एक दिन ऐसा आता है जब दिल धड़कना बंद हो जाता है और फिर जीवन लीला समाप्त हो जाती है, आखिर कौन है इसका नियंत्रणकर्ता ।

एक वयस्क मानव शरीर में ५-६ लीटर रक्त होता है, महिलाओं में इसकी मात्रा १/२ लीटर कम होती है, रक्त का कार्य ताप का नियंत्रण तथा शरीर को रोगों से रक्षा करना होता है । इस रक्त में निरन्तर संचार होता रहता है जिसे Blood Circulation कहा जाता है । क्या रक्त संचार अपने आप होता है ?

मानव शरीर में २०६ हड्डियाँ होती हैं सिर में २९ हड्डियाँ होती हैं, रीढ़ में २६ रहती हैं, कपाल में ८, चेहरे में १४ और कान में ६ हड्डियाँ होती हैं । ईश्वर की अवधारणा में विश्वास नहीं रखने वाले कृपया यह बतायें कि शरीर में २०६ हड्डियाँ क्यों प्रदान की गई हैं ? अगर २०६ के बदले में सिर्फ एक हड्डी हो तो क्या हो जायेगा । यही होगा कि न तो हम उठ सकते हैं, न ही मुड़ सकते हैं और न ही चल-फिर सकते हैं । मानव शरीर के दोनों हाथों में ५-५ अंगुलियाँ प्रदान की गई हैं, अगर ये अंगुलियाँ न हो तो दुनियाँ का सारा मेकेनिज्म और टेक्नोलॉजी धरी की धरी रह जायेगी । इसका मतलब है शरीर निर्माण के हर बात में विज्ञान छिपा हुआ है ।

अब हम मानव शरीर से बाहर आकर इस ब्रह्मांड को देखें । इस ब्रह्मांड में सभी ग्रह और नक्षत्र गतिशील हैं । हमारी पृथ्वी भी अपने अक्ष पर एक हजार मील प्रत्येक घंटे के चाल से लट्टू की तरह घूमती है जिस वजह से दिन और रात होता है । इसी प्रकार हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर भी ६६ हजार मील प्रति घंटे के रफ्तार से चक्कर लगाती है और ३६५ दिन ५६ मिनट और ४६ सेकेण्ड में एक चक्कर लगाती है, यही कारण है कि ३६५ दिनों का एक साल माना जाता है । हमारा सूर्य भी

अपने सभी ग्रहों और सौर मण्डलों के साथ लेकर घूम रहा है सूर्य प्रत्येक घंटे में ४० हजार मील क रफ्तार से चलता है । कितना बड़ा आश्चर्य है कि सभी ग्रह और नक्षत्र नियमपूर्वक चलता रहता है, न कभी थकता है, न कभी रुकता है और न ही कभी आराम करता है इतना ही नहीं ये अरबों-खरबों ग्रह और नक्षत्र गतिमान होते हुए भी आपस में नहीं टकराते हैं । कैसी है ये व्यवस्था । प्रश्न उठता है कि वो कौन है जो सूर्य और पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों और नक्षत्रों में गति का संचार करता है । प्रकाश भी १ लाख ८६,००० मील प्रत्येक सेकेण्ड के चाल से चलता है इसी प्रकार आवाज की भी अपनी गति होती है । क्या प्रकाश और आवाज ने जो निर्जीव है अपनी गति स्वयं ही निर्धारित कर ली है ।

इस प्रकार के हजारों प्रश्न हैं जिसका उत्तर ईश्वर की अवधारणा से इन्कार करते हुए दूढ़ना बहुत मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है । मैं तो पहाड़ों और नदियों में जंगलों के झूमते वृक्षों में, समुद्र की उफनती लहरों में, झरने के कलकल करते जलप्रपात में, तारों भरे आकाश में, आग की धधकती ज्वाला में, इन अरबों-खरबों ब्रह्माण्डों में, इस अनन्त विश्व में, इस आकाश के भीतर दिखाई देने वाले इस अन्तिम तारे में भी जिसके १ लाख ८६००० मील प्रत्येक सेकेण्ड की चाल से चलते हुए प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में एक करोड़ वर्ष लगते हैं मैं उसी प्रियतम प्रभु को देखता हूँ ।

इस लेख के पढ़ने के पश्चात् ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करने वाले लोगों में ईश्वर के होने अथवा नहीं होने की जो भ्रान्तियाँ हैं, वो दूर हो सके तो इसे हम अपना अहोभाग्य समझेंगे ।

सधन्यवाद !

प्रचार मंत्री, आर्य समाज
मुजफ्फरपुर (बिहार)
मो० ९८३५२०६६८८

—०—

(पृष्ठ २६ का शेषांश)

जिसमें प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक चतुर्वेद शतकम् से वेद पारायण यज्ञ तथा भजनोपदेश एवं उपदेश तथा सायं ३ बजे से रात १० बजे तक विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए ।

उपरोक्त दोनों पुरोगम में आमंत्रित विद्वान् आचार्य डॉ० शिवदत्त पाण्डेय वेदवेदांग गुरुकुल विद्यापीठ धनपत गंज, सुल्तानपुर, पं० त्रियुगी नारायण पाठक गोरखपुर, सुश्री सनीक्षा आर्या वेतिया विहार से श्री संत कुमार कलकत्ता तथा श्री रामनारायण ढोलवादक टांडा ने भाग लिया ।

इस आयोजन को सफल बनाने में श्री चक्रधर पाण्डेय, श्री बच्चू पाण्डेय, श्री तालुकदार सिंह एवं श्री विश्वनाथ जायसवाल विशेष प्रयत्नशील रहे तथा कार्यक्रम का संयोजन आर्यसमाज कलकत्ता के सक्रिय कार्यकर्ता श्री लक्ष्मीकान्त द्वारा किया गया ।

राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का काव्यानुवाद

— पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'

मो० : 9830420496

(५)

श्री पं० देवनारायण तिवारी — आर्य समाज के उपदेशक और विद्वान् कवि हैं, इनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें ४ महाकाव्य हैं । पं० जी ने सत्यार्थ प्रकाश का छन्दबद्ध भावानुवाद किया है । आर्य समाज कलकत्ता ने इसे आर्य संसार मासिक पत्र में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करने का निश्चय किया है ।

यह षष्ठ कड़ी आपके समक्ष है । — सम्पादक

प्रथम समुल्लास (गत अक्टूबर अङ्क से आगे)

अथ ओंकारार्थः

जो (शन्नो मित्रःशंवरुणः)

छन्द — इस मन्त्र में मित्रादि नाम (पुनीत हैं) जगदीश के ।
जो भी मिलें अन्यत्र उनको भी समझ जगदीश के ॥
तन्मय हृदय स्तुति अरुः प्रार्थना निश्चय करें ।
वह ही उपासन योग्य है (उस श्रेष्ठ को ही सब वरें) ॥५४॥

गुण, कर्म और स्वभाव अरु व्यवहार जिसके सत्य हों ।
जो अद्वितीय महान् हो सामर्थ्य जिसका अत्य हो ।
बल-कर्म अरु गुण आदि ईश्वर के अतीव अनन्त हैं ।
जड़, जीव और पदार्थ के गुण आदि सीमित सान्त हैं ॥५५॥

सब देव गण ब्रह्मादि भी उस देव को आराधते ।
सारे विबुध, विद्वान् साधक ब्रह्म को ही मानते ॥
अतएव दृढ़ विश्वास पूर्वक मानकर प्रभु को वरें ।
है योग्य सब जन को यही, पथ ब्रह्म का सुन्दर धरें ॥५६॥

प्रश्न - मित्रादि नामों से सखा, इन्द्रादिगण से देवता —
बस ग्रहण करना चाहिए, देता तुम्हें हूँ मैं बता ॥
कारण कि देवों का जगत् में नाम है व्यवहार से ।
उस हेतु देव प्रसिद्ध हैं, शुभ कर्म-लोकाचार में ॥५७॥

उत्तर - यह है कदापि उचित नहीं इसमें बहुत से भेद हैं ।
नर एक सा व्यवहार रखता है नहीं यह खेद है ।
जो मित्र होता एक का वह ही किसी का शत्रु बन ।
करता अनेकों हानि है, रहता न दृढ़ उसका स्वमन ॥५८॥

उसका लगाव न एक सा रहता किसी से सर्वदा ।
रहता उदासी बन कमी, फिर और कभी रहता मुदा ॥
पर ईशं रहता एकसा निश्चित सभी का मित्र है ।
प्रिय ही सदा सब भांति है, संसार एक कलत्र है ॥५९॥

अनुकूल कोई और उससा जीव हो सकता नहीं ।
इस हेतु उस परमात्मा का ग्रहण होता सब कहीं ॥
हाँ, गौण अर्थों में सुहृद मित्रादि आ सकते सभी ।
पर मुख्यतः परमात्मा का ग्रहण करते शास्त्र भी ॥६०॥

(जैसे) त्रिमिन्दा स्नेहने इस धातुसे औणादिक “क्त्र”
प्रत्यय के होने से “मित्र” शब्द सिद्ध होता है ।
मेद्यति स्निह्यति स्निह्यते ते वा स मित्रः ।

जो स्नेह करने और सबको प्रीति करने योग्य है ।
इस हेतु कहते “मित्र” उसको, (यह) नाम उबके योग्य है ।
(रक्षण करे, पाले सभी को बन हितैषी मित्र-सा ।)
माने सभी को पुत्र सम, व्यवहार सबसे एक सा ॥६१॥

वृञ् वरणे, वर ईप्सायाम -
इन धातुओं से उणादि “उनन” प्रत्यय होने से वरुण शब्द सिद्ध होता है।
यः सर्वान् शिष्टान् मुमुक्षुर्धर्मात्मनो वृणोत्यथवा यः
शिष्टैर्मुमुक्षुर्भिर्यमात्मन्भिर्व्रियते वर्ध्यते वा स वरुणः परमेश्वरः ।

छन्द - जो आत्मयोगी, मुक्ति इच्छुक, विबुध भक्तों को वरे ।
स्वीकार कर धर्मात्माओं को मुदित निशदिन करे ।
या शिष्ट, साधक, मुक्त, धार्मिक जन जिसे स्वीकारते ।
कह वरुण उसको श्रेष्ठ मानें भक्ति उस पर वारते ॥
इस हेतु कहते “वरुण” उसको क्यों कि है वह श्रेष्ठतम् ।
वह ही महत्तम शक्ति है उससे न कोई उच्चतम् ॥६२॥

(क्रमशः...)

काम आये सर्वदा शुभकामनायें

— देवनारायण भारद्वाज

वह दिन का अन्तिम समय था। सब घर जाने को तैयार थे, तभी प्लान्ट में एक तकनीकी समस्या उत्पन्न हो गई और वह उसे दूर करने में जुट गया। जब तक वह कार्य पूरा करता, तब तक अत्यधिक देर हो गई। दरवाजे सील हो चुके थे और लाइटें बुझा दी गयी थीं। बिना हवा और प्रकाश के पूरी रात आईस प्लान्ट में फँसे रहने के भय से उसका कब्रगाह बनना तय था। घंटे बीत गये, तभी उसने किसी को दरवाजा खोलते पाया। सिक्यूरिटी गार्ड टार्च लिये खड़ा था। उसने उसे बाहर निकलने में मदद की। उस व्यक्ति ने सिक्यूरिटी गार्ड से पूछा आपको कैसे पता चला कि मैं भीतर हूँ ? गार्ड ने उत्तर दिया — 'सर इस प्लान्ट में ५० लोग कार्य करते हैं, पर सिर्फ एक आप है जो सुबह मुझे हेलो और शाम को जाते समय बाय कहते हैं। आज सुबह आप ड्यूटी पर आए थे, पर शाम को बाहर नहीं निकले। इससे मुझे शंका हुई और मैं देखने चला आया। वह नहीं जानता था कि किसी को छोटी सी शुभकामना का सम्मान देना कभी उसका जीवन भी बचायेगा जब भी आप किसी से मिलें तो गर्म जोशी भरी मुस्कराहट से उसका सम्मान करें। इससे आपको भी खुशी मिलेगी और सामने वाले व्यक्ति को भी। हमें नहीं पता, पर हो सकता है कि वह आपके जीवन में भी कोई चमत्कार दिखा दें।

महात्मा विदुर ने अपने इसी अनुभव को अधिकाधिक गहराई से यों व्यक्त किया है :—

चक्षुसा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम् ।

प्रसादयति लोकं यस्तं लोकोऽनुप्रसीदति ॥ वि० नी० २.२५॥

अर्थात् राजा हो या प्रजा — जो कोई भी व्यक्ति दूसरों को प्रेममयी दृष्टि से, मानसिक हित चिन्तन से, मधुरवाणी से और सहायतापूर्ण कर्म से अर्थात् इन चारों प्रकार से प्रसन्न करता है उसे दूसरे लोग भी प्रसन्न करते हैं।

शुभकामना को अंग्रेजी में Good Wishes और हिन्दी में सदेच्छा कहते हैं। इसके व्यवहार से हम जैसी इच्छा (कामना) दूसरे के लिए करते हैं वैसी ही वह हमारे लिए करता है। विशेषज्ञ कहते हैं कि जब आप सम्बन्धों को लोगों के प्रति कुछ शब्द कहकर ही नहीं, प्रत्युत दायित्व समझ कर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हैं, उनसे सहयोग करते हैं, उनसे मधुरता का व्यवहार करते हैं, तो उस समय आपके आस-पास के वातावरण में सकारात्मक संदेशों का संचार होता है। आपने इस बात पर ध्यान देने का यत्न किया कि कब कब आपको क्षणिक ही सही मुस्कराने — हँसने या गुनगुनाने का अवसर दिया — तो तब न सही अब अवश्य उनके लिये आप कह उठेंगे — धन्यवाद। यह प्रवृत्ति आपके लिए मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक सुरक्षा के उपहार सिद्ध होगी।

मनुहार की पारस्परिकता परवैदिक ऋषियों ने अनवरत बल दिया है। अथर्ववेद (का० १९ सूक्त ५२ मन्त्र ४१) द्वारा हमको सुन्दर सटीक सामयिक मार्गदर्शन सहज ही सुलभ होता है :—

कामेन मा काम आगन् हृदयाद्धृदयं परि ।

यदमीषामदो मनस्तदैतूप मामहि ॥

अर्थात् — कामना से कामना उत्पन्न होती है । यह एक हृदय से दूसरे हृदय के प्रति हुआ करती है । दूसरा व्यक्ति मुझे चाहता है तो मैं भी उसे चाहने लगता हूँ । उसकी कामना ने मुझ में भी कामना को उत्पन्न किया है । वस्तुतः अनुराग पारस्परिक ही हुआ करता है । जो विद्वान्-मनीषी ज्ञानी जन हैं, उनका मन हमसे दूर न जाने पाये वे भले किसी परिस्थितिबश हमसे दूर हों, किन्तु उनका मन हमसे मिला रहे । शिक्षण संस्थान-गुरुकुल के आचार्य सदैव अपने शिष्य के साथ नहीं रह सकते । विद्यार्थी गण तो समावर्तन के बाद गृहस्थ के कर्तव्यों का पालन करने हेतु दूर-दूर बिखर जायेंगे, किन्तु शिष्यगण अपने आचार्य के मन से जुड़े रहेंगे, तो उनकी यही दीक्षा जीवन उपलब्धियों की दक्षता में परिलक्षित होती दिखाई देगी । मन की कामनाओं का पारस्परिक संचरण आचार्य शिष्य तक ही सीमित न रहकर संसार की अनेकशः भूमिकाओं में घटित होता है । पिता-पुत्र, माता-पुत्र, पुत्री, मित्र-मित्र, राजा-प्रजा, पति-पत्नी आदि अनेक क्षेत्रों में प्रभावी होता है ।

इस कामना का पारस्परिक विनिमय मनोकामना के रूप में आन्तरिक होना चाहिये । केवल बाहरी कृत्रिम नहीं होना चाहिये, अन्यथा दुर्घटना घटित हो सकती है । आख्यान है कि रात्रि के घोर अन्धकार में कई चोर चोरी करने के लिए जा रहे थे । सामने से आते दिखाई दिए — सन्त तुलसीदास । चोरों ने समझा — अपशकुन हो गया । पकड़े जा सकते हैं । चोर ने पूछा ? तुम कौन हो ? तुलसी दास ने उत्तर दिया — जो तुम हो-सो मैं हूँ । चोरों ने राहत की श्वाँस ली । तो, चलो हमारे साथ, तुलसीदास चल दिये । चोरों ने एक मकान की दीवार को खोद कर नकब लगाया । तुलसीदास को बाहर खड़े रहकर उनको यह काम सौंपा — कोई दिखाई दे, तो अन्दर मिट्टी फेंक देना । हमलोग भाग खड़े होंगे। चोरों ने भीतर जाकर सामान समेटा — तभी तुलसीदास ने भीतर की ओर मिट्टी फेंकना आरम्भ कर दिया । सभी चोर सामान छोड़कर बाहर निकलकर भागे और तुलसीदास से पूछा ? कौन दिखाई दिया — बताओ । तुलसीदास ने कहा — ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, वही दिखाई दिया । मैंने आप सबको सचेत कर दिया । सन्त तुलसीदास का उद्देश्य था — अपने हृदय की भावना को चोरों के हृदयों तक सम्प्रेषित करना । चोर इसे ग्रहण कर लेते हैं तो चोर नहीं रहेंगे सन्त बन जायेंगे — यह हृदय से हृदय तक कामना-शुभकामना का सम्प्रेषण हो जायेगा।

संसार को संचालित करने के लिए जब युवा दम्पती विवाह-बन्धन में आबद्ध होते हैं, तब सभी प्रक्रियाओं को पूर्ण करने के बाद आशीर्वाद वाचन से पूर्व उन दोनों को परस्पर हृदय-स्पर्श कराया जाता है, इसे हृदय परिवर्तन भी कह देते हैं — “मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु ।” इसका रहस्य एक ८८ वर्षीय बुजुर्ग ने अपने पोते को उस दिन समझाया — जब वह अपनी नववधू के साथ ऊँची आवाज में गुस्से के साथ बात कर रहा था । उस बृद्ध ने बताया कि क्रोध की आवाज कठोर-कर्कश व ऊँची होती है, जबकि प्यार के सुर मधुर-शान्त व मन्द होते हैं, क्योंकि दोनों हृदय के निकट होते हैं, जबकि क्रोधावेश में उनके हृदय की दूरी बढ़ती ही चली जाती है । विवाह संस्कार के

हृदय-स्पर्श की भूमिका सन्तान-परिवार-समाज की सफलता की प्रवेशिका होती है। इतने पर भी संसार-सागर को तरने के लिये बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है।

सन्त तुलसीदास ने महाबली रावण की नम्रता का वर्णन अपनी सहायता व स्वार्थपूर्ति के लिए छद्मवेशी मारीचि से यों किया है —

नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ।

भयदायक खलकी प्रियवानी । जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥

नीच का झुकना (नम्र होना) भी अत्यन्त दुःखदाई होता है जैसे अंकुश, धनुष, साँप और बिल्ली झुकते हैं तो मनुष्य की घोर हानि करते हैं। दुष्ट व्यक्ति की मीठी वाणी भी उसी प्रकार भयदायक होती है, जैसे बिना ऋतु के फूल होते हैं। उदाहरणतः महानगर के प्रमुख मार्ग पर एक सेवानिवृत्त उच्चाधिकारी अपनी पत्नी के साथ जा रहे थे। स्कूटर पर दो युवक आये और नम्रता पूर्वक उनके चरण स्पर्श किये। उनका काम पूछा और एक उस काम के लिए उच्चाधिकारी को स्कूटर पर बैठाकर आगे ले गया, पीछे दूसरे ने उनकी पत्नी के आभूषण उतरवा लिए और दोनों रफूचक्कर हो गये। वेद विद्या में निष्णात युवा जब शासक-प्रशासक बनते हैं तो वे मनोविज्ञान में दक्ष होते हैं। राजा के दरबार में राजधानी के संप्रान्त नागरिक उपस्थित हुआ करते थे। कुछ दिन से एक नया व्यक्ति आकर्षक साज सज्जा के साथ आने लगा। राजा उसको देखकर असहज अनुभव करता, वह बिल्कुल उसको पसन्द नहीं करता। राजा ने मन्त्री से परामर्श किया। उसने गुप्तचरों द्वारा खोज करायी, तो पता चला कि वह चन्दन का बड़ा व्यापारी है और उसने चन्दन का अत्यधिक भण्डारण कर रक्खा है, वह चाहता है कि इसकी विक्री हो जाये, तो उसके पास प्रभूत धनराशि आ जाये। व्यापारी मन ही मन सोचता था कि राजा की मृत्यु हो तो उसकी अन्त्येष्टि में चन्दन का प्रयोग हो जायेगा और वह धन से मालामाल हो जायेगा।

मन्त्री ने गुप्त आख्या से राजा को अवगत कराये बिना ही राष्ट्रभृत महायज्ञ की योजना बना दी। राजधानी यज्ञधूम से झूम उठी। राजा-प्रजा आचार्य सभी हर्ष विभोर हो गए। उस व्यापारी का सारा चन्दन-भण्डार महायज्ञ में उपयोग हो गया। उसको मनवांछित धन लाभ हो गया। वह व्यापारी राज दरबार में यथापूर्व भाग लेता रहा। यज्ञादि जनकल्याण कार्य कराये जाने से प्रसन्न होकर वह मन ही मन राजा के प्रति भरपूर शुभ कामनायें करने लगा। अभी तक मन्त्री ने अपनी आख्या राजा को नहीं बतायी थी। राजा ने स्वयं ही अपने आन्तरिक भाव परिवर्तन की भूमिका मन्त्री को बतलानी शुरू कर दी — जिसका सार यह था कि वह व्यापारी मुझे बुरा नहीं अपितु अच्छा लगने लगा है। लोकोक्ति दिल से दिल को राहत चरितार्थ हो गई। अब मन्त्री ने भी अपनी गुप्त अन्वेषण एवं राष्ट्रभृत यज्ञ की योजना का राजा के समक्ष रहस्योद्घाटन कर दिया।

ऋग्वेद के असीम क्षीरसागर में से उभरती है उसकी नवनीत तुल्य अन्तिम ऋचा जो राष्ट्र-परिवार में सम-संकल्प बद्धता का सन्देश देती है :—

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति॥ ऋ० १०.१९१.४॥

(शेष पृष्ठ १९ पर)

ब्रह्मांड में जीवन का अस्तित्व

— परीक्षित मंडल 'प्रेमी'

आज से शताधिक वर्ष पूर्व महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है कि “सूर्य, चंद्रादि में मनुष्यादि प्राणी हैं। पृथिवी, सूर्य चंद्र और तारे वसु नाम इनका इसलिए रखा गया है कि ये बसने के स्थान हैं और बसाते हैं। यदि हम इनमें प्रजाति की सृष्टि न माने तो इनका वसुत्व नहीं रह जाता।” यहाँ विज्ञानर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्पष्ट कहा है कि सूर्य चंद्रादि में मनुष्यादि प्राणी हैं। वैदिक विज्ञान के प्रमाण पुरुष परमहंस स्वामी दयानंद सरस्वती का यह महार्घ मंतव्य मिथ्या नहीं है। अर्वाचीन प्राच्य और प्रतीच्य वैज्ञानिकों ने भी अपने नवीन गवेषणात्मक अनुशीलन के आधार पर ब्रह्मांड में जीवन का अस्तित्व मुक्तकंठ से स्वीकार किया है। इस संबंध में यहाँ संक्षेप में ही कुछेक वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत किया जाता है।

सौरमंडल के प्राणियों के व्यापक अध्ययन के लिए विख्यात नोबल पुरस्कार विजेता डॉ० फ्रांसिस क्रिक तथा डॉ० लेस्ली आर्गन नामक दो पाश्चात्य जीव वैज्ञानिक ने २६ अगस्त १९७३ को यह सिद्धांत प्रतिपादित किया है कि जीवन की उत्पत्ति धरती पर नहीं हुई। उनका कथन है कि आज से अरबों वर्ष पूर्व हमारी आकाश गंगा में स्थित किसी सभ्य ग्रह से शैवाल या सूक्ष्म जीवों से भरा कोई अंतरिक्षयान पृथिवी पर आया होगा और पृथिवी पर जीवन की उत्पत्ति करके अपने ग्रह पर लौट गया होगा। हमारी आकाश-गंगा में रहने वाले प्राणियों ने ही पृथिवी पर मानवों को सभ्य बनाया। इसी प्रकार रॉकेट के जन्मदाता विश्व-विख्यात वैज्ञानिक प्रो० डॉ० रिमैन हावर्थ ने भी अपने एक भाषण में कहा है कि “पृथिवी पर कभी अन्य ग्रह वासियों का आगमन हुआ था।” पुनः सुप्रसिद्ध खगोलशास्त्री कार्ल एडवर्ड सैगे खगोल विज्ञान संबंधी नए शोध किए हैं और इस निश्चय पर पहुँचे हैं कि “ब्रह्मांड में अन्यत्र भी जीवन है और वह मनुष्य से कहीं अधिक बुद्धिमान तथा साधन संपन्न है।” विश्रुत खगोलशास्त्री डॉ० ले ने भी कहा कि अन्य ग्रहों के निवासी पृथिवी वासियों से भी अधिक सभ्य तथा वैज्ञानिक और तकनीकी की दृष्टि से अधिक उन्नत और विकसित हैं। पाश्चात्य वैज्ञानिक सी० एस० लेविस अपनी पुस्तक आउट ऑफ दि सायलेंट प्लेनेट में लिखते हैं कि पृथिवी के अतिरिक्त अन्य लोकों में भी मनुष्य से मिलते-जुलते प्राणी रहते हैं। हावर्ड वेधशाला (न्यूयॉर्क) के अवकाश प्राप्त ज्योतिषी डॉ० हारलो शेपले ने महर्षि दयानंद सरस्वती के इस विश्वास की पुष्टि की है “कि केवल पृथिवी पर ही जीव नहीं रहते बल्कि अन्य लोकों में भी जीवन का अस्तित्व विद्यमान है।” रूस के महान वैज्ञानिक इयेशेफ्लेवली वस्की ने अपने शोध ग्रंथ दि इंटेलिजेंट लाईफ इन दि यूनिवर्स में इस तथ्य की पुष्टि की है कि अकेले पृथिवी पर ही बुद्धिमान प्राणी नहीं रहते। जर्मन वैज्ञानिक एरिक वान डेनिकेन ने अपनी पुस्तक “चैरी अट्स ऑफ दि गॉड्स” तथा “रिटर्न टू दि स्टार्स” में इस तथ्य का उद्घाटन किया है कि — “अन्य ग्रहों के निवासी पृथिवीवासियों की टोह लेने के लिए समय-समय पर उतरते हैं। यहाँ के वैज्ञानिकों की तुलना में विज्ञान के क्षेत्र में उनकी पहुँच अधिक है।” इससे स्पष्ट होता है कि पृथिवी की तुलना में ब्रह्मांड में भी विकसित सभ्यताएँ मौजूद हैं। अंतरिक्षविज्ञानी डॉ० फानवन ने कहा है कि

इस “विशाल ब्रह्मांड में ऐसे प्राणियों का अस्तित्व निश्चित रूप से विद्यमान है, जो हम मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक समुन्नत है।” पुनः कैलिफोर्निया केरेडियो एस्ट्रोनामी इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डॉ० रोनल्ड एन० ब्रेसवेल ने कहा है कि “अन्य ग्रह-तारकों में समुन्नत सभ्यता वाले प्राणी निवास करते हैं और वे अपनी पृथिवी के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हैं।” वे इस प्रयोजन के लिए लगातार संचार उपग्रह भेज रहे हैं। ये उपग्रह कैसे हैं, इसका विशेष विवरण प्रस्तुत करते हुए डॉ० ब्रेसवेल ने कहा है — “वे फुटबॉल की गेंद जितने होते हैं। उनमें कितने ही रेडियो यंत्र और कंप्यूटर लगे रहते हैं।” प्रख्यात पुरातत्त्वविद् एरिक वान डेनिकेन ने अपनी पुस्तक “इन सर्च ऑफ दि एंशाएंट गॉड्स” में लिखा है — “पृथिवी से इतर अन्यान्य ग्रहों में निश्चित ही कोई अति विकसित सभ्यता निवास करती है।” अपने कथन की पुष्टि हेतु इन्होंने वैदिक विज्ञान की विकसित तकनीक का इतिहास, आर्यों का पृथिवी पर अवतरण तथा तत्कालीन सतयुगी परिस्थितियों का भी वेदों के माध्यम से हवाला दिया है। महान तत्त्वज्ञ हेराल्कीट्स ने इस तथ्य का प्रतिपादन किया है कि “ब्रह्मांड के लोक-लोकांतरों में न केवल समुन्नतस्तर के देवमानव रहते हैं, वरन वे धरती के साथ संपर्कसाधने तथा सहयोग आदान-प्रदान के लिए भी उत्सुक रहते हैं।” विश्वविख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन ने एक भेंटवार्ता में प्रो० चार्ल्स हैपगुड से कहा था — “मैं व्यक्तिगत रूप से यह विश्वास करता हूँ कि प्रागैतिहासिक अवधि में अन्य लोकवासियों का आवागमन हमारी धरती पर रहा है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो० हेज होवर कहते हैं कि शुक्र गैसीय वातावरण में भी उसी प्रकार का जीवन हो सकता है, जैसा कि धरती पर उन्हीं परिस्थितियों में आरंभ वाले दिनों में वाष्पीय समुद्रों के बीच पनपा। ये परिस्थितियाँ जैसे-जैसे बदलती गईं, प्राणियों के आकार-प्रकार ही नहीं, आहार-विहार भी बदलते गए।” जर्मन के विश्वविख्यात जीव विज्ञानी डॉ० डेनिकेन का प्रतिपादन है कि “धरती पर जीवन किसी ध्रुवतारे से उतरा है। कोई अंतरिक्षवासी यहाँ आए और जीवन-बीज बिखेर गए। उन्हीं से धरती पर विभिन्न जीवधारियों की फसल उगी और फैली है। वे अपने कथन की पुष्टि में केवल ब्रह्मांड विद्या का ही नहीं, वरन पौराणिक उपाख्यानों का भी सहारा लेते हैं।” सर जेम्स जीन्स ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक दि मिस्टीरियस यूनिवर्स में लिखा है कि “समुद्रतल के बालुका कणों की तरह बिखरे हुए ब्रह्मांड क्षेत्र के ग्रह-तारकों में अगणित ऐसे हैं जिनमें जीवन मनुष्यों से भी अधिक समुन्नत स्तर का है।” स्वीडन के नोबल पुरस्कार विजेता विश्वविख्यात वैज्ञानिक स्वांति अहर्नियस ने लिखा है कि — “जीन्स ने सर्वप्रथम बाह्य अंतरिक्ष में जन्म लिया था। वहीं से शक्तिशाली जीवाणु अन्य ग्रहों में गए। पृथिवी भी उनमें से एक है और धीरे-धीरे जीव विकासक्रम में आज की स्थिति में विश्व पहुँचा है।” इससे स्पष्ट होता है कि अन्य ग्रहों-नक्षत्रों पर न केवल जीवों का निवास है, बल्कि सभ्यता की दृष्टि से वे मनुष्य से अधिक कहीं विकसित हैं।

नासा के सहयोग से निर्मित, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय की एयरोस्पेश प्रयोगशाला में कार्य करने वाले भारतीय वैज्ञानिक डॉ० राम सिन्हा (सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा के बड़े भाई) ने स्पष्ट लिखा है कि “अतीत में सभ्य ग्रहों के समुन्नत लोग पृथिवी पर आ चुके हैं तथा उन्होंने पृथिवी और अन्य अविकसित ग्रहों से निरन्तर संपर्क बनाए रखने के उद्देश्य से अंतरिक्ष में कहीं अपना एक अड्डा भी

स्थापित कर रखा है....ऐसी संभावना है कि उनका यह अड्डा बृहस्पति या शनि के किसी उपग्रह या हमारे सौरमंडल के बाहर कहीं स्थित हो ।”

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में यह कहा जा सकता है कि अन्य ग्रहों-नक्षत्रों पर जीव की संभावना है । अब वैज्ञानिकों में भी यह मान्यता परिपुष्ट हो रही है कि सभ्यता पृथिवी तक ही सीमित नहीं है । वैज्ञानिक डॉ० फ्रेडमैन ने लिखा है कि “इस अंतहीन विशाल ब्रह्मांड में जीवन और सभ्यता का अस्तित्व है, जो पृथिवी की तुलना में कहीं अधिक विकसित है ।” डॉ० फ्रेडमैन ने संभावना व्यक्त करते हुए स्पष्ट कहा है कि पृथिवी ऊर्जा का स्रोत है । संभव है, अन्य ग्रहों के निवासी पृथ्वी पर ऊर्जा संग्रह करने आते हैं । इस कार्य के लिए उन्होंने वैज्ञानिक तकनीकी का विकास कर लिया हो । जो भी हो इस अनंत विस्तार में तथा पूरे ब्रह्मांड में भी जीवन होने की संभावना अब असंदिग्ध होती जा रही है । इसका अपना महत्व अक्षुण्ण है ।

हिंदी अध्यापक - संत फ्रांसिस उच्च विद्यालय

पो०-पोडैयाट-८१४१५३

मो० ९१६६२२०८००५

जिला-गोड्डा (झारखंड)

(पृष्ठ १६ का शेषांश)

हो सभी के सम हृदय संकल्प अविरोधी सदा ।

मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ॥

अपने शिक्षण संस्थान में आचार्यगण इस ऋचा का पाठ या अर्थ गायन ही नहीं इसका व्यावहारिक अभ्यास भी कराते रहे हैं, जो मुनि सनतकुमार के गुरुकुल में आयोजित दीक्षान्त समारोह के दृश्यदर्शन से स्पष्ट झलकता प्रतीत होता है । बृहत सभा भवन के बड़े मंच पर एक ओर आचार्यगण व दूसरी ओर राज्याधिकारीगण विराजमान थे । इन दोनों के मध्य स्थित उच्चासन पर गुरुकुलपति मुनि सनतकुमार व राज्य अधिपति (सम्राट) विराज रहे थे । सामने के मैदान में सभी वे ब्रह्मचारी बैठे थे, जिन्हें दीक्षान्त (समावर्तन) के फलस्वरूप आगामी कार्यक्षेत्र के लिए अपने घर प्रस्थान करना था । मुनि सनतकुमार ने ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा — अब तक शिक्षण काल में आप लोगों से बहुत प्रश्नोत्तर हुए हैं । आज आपसे अन्तिम प्रश्न करते हैं । बताइए — जीवन में आगे क्या बनना चाहते हैं — अधिपति या बृहस्पति ? सभी का एक स्वर से सामूहिक उत्तर था — बृहस्पति: बृहस्पति: बृहस्पति । उत्तर सुनकर सम्राट महोच्चार कर उठे—मुनि महाराज की जय: जय: जय: समान संकल्प व हृदय वाले इन्हीं युवकों में से राजकाज के लिए चुने गये युवक ही कह सकेंगे — वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता । (यजु० ९.२३)। यथा अधिपति तथा प्रजा-मति अर्थात् यथा राजा तथा प्रजा के अनुसार राष्ट्र में सब सबके लिए शुभकामना करने वाले होंगे, तो सार्थक हो उठेगा — श्रुति-संकल्प वयं स्याम पतयो रयीणाम् । (ऋ० १०.१२१.१०) अर्थात् — सभी राष्ट्र नागरिक यथायोग्य धनैश्वर्यों के स्वामी होंगे ।

नयन मुस्कायें - अधर उत्सव मनायें । काम आयें सर्वदा शुभकामनायें ॥

वरेण्यम् अवन्तिका (प्रथम)

रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००१(उ०प्र०)

डॉ० श्रीकान्तजी उपाध्याय

डॉ० श्रीकान्त जी उपाध्याय का जन्म ग्राम झौआरा जिला सुल्तानपुर (उ० प्र०) के प्रसिद्ध उपाध्याय परिवार में दीपावली के दिन सन् १९३० ई० में हुआ था। आपके पिता श्री पं० सीतारामजी उपाध्याय एवं माता श्रीमती राम दुलारी देवी थीं। पिताजी संस्कृत के परम उच्चकोटि के साहित्यिक विद्वान् एवं आशुकि थे। ये साहित्य के उच्च ग्रन्थों को कण्ठस्थ ही पढ़ाते थे। डॉ० उपाध्याय के दो पितृव्य पं० नागेश्वरजी उपाध्याय और पं० अच्युतानन्द जी उपाध्याय व्याकरणाचार्य अपने-अपने क्षेत्र के प्रकाण्ड विद्वान् थे। डॉ० उपाध्याय थोड़ी उम्र में ही पिताजी की छत्रछाया से वंचित हो गये और इनकी शिक्षा-दीक्षा कनिष्ठ पितृव्य पं० अच्युतानन्दजी ने सम्भाली। डॉ० उपाध्याय आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य पं० रमाकान्तजी शास्त्री के ज्येष्ठ पितृव्य के सुपुत्र हैं। फलतः डॉ० उपाध्याय का अध्ययन-काल आचार्य रमाकान्तजी की छत्रछाया में बीता। सुल्तानपुर से हाई स्कूल की परीक्षा पास करके डॉ० उपाध्याय कलकत्ता आये और कालेज की सम्पूर्ण पढ़ाई आचार्य रमाकान्तजी के अभिभावकत्व में यहीं कलकत्ता में की। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण कर कलकत्ता विश्वविद्यालय से ही पीएच० डी० की उपाधि ग्रहण की। इनके शोधप्रबन्ध का विषय था—मञ्जुन कृत मधुमालती का भाषाविषयक अध्ययन।

डॉ० उपाध्याय सन् १९५९ ई० से कलकत्ता के प्रसिद्ध कालेज सेठ आनन्दराम जयपुरिया कालेज में हिन्दी के वरिष्ठतम प्राध्यापक थे। आप आर्यसमाज कलकत्ता के सदस्य थे और कुछ दिन आर्यसमाज कलकत्ता के उपमन्त्री भी थे। डॉ० उपाध्याय समर्थ अध्यापक और ओजस्वी वक्ता थे। कई वर्षों तक आप आर्यसमाज जोड़ासांकू और आर्यसमाज मल्लिक बाजार के सत्संगों में प्रधान व्याख्याता की भूमिका निभाते रहे। जिन दिनों डॉ० उपाध्याय आर्यसमाज कलकत्ता के कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय थे उन दिनों आप आर्यसमाज कलकत्ता की पत्रिका 'आर्य संसार' के सम्पादन में अपेक्षित सहयोग किया करते थे। डॉ० उपाध्याय ने सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द पर कुछ लेख भी लिखे थे।

डॉ० उपाध्याय ने एक परिश्रमी, कुशल और लोकप्रिय अध्यापक के रूप में बड़ी अच्छी ख्याति प्राप्त की, १९५९ से लेकर लगभग सुदीर्घ ३६ वर्षों तक जयपुरिया कॉलेज में स्नातक स्तर पर सफल अध्यापन करके आप १९९५ में सेवा निवृत्ति हुए, सेवा निवृत्ति के पश्चात् आपने अपने आपको सम्पूर्ण रूप से वैदिक विद्या और आर्य समाज के प्रचार में लगा दिया। जो लोग आपके संपर्क में आये, वो इस बात के साक्षी हैं कि अवकाश प्राप्त करने की उम्र में भी आपका उत्साह और आपकी उर्जा असाधारण थी, किन्तु दैव विधान कुछ और ही था।

कॉलेज से रिटायर होने के मात्र २ वर्षों बाद ही डॉ० उपाध्याय अचानक ही मैलिंगनैन्ट मलेरिया के भीषण प्रकोप की चपेट में आ गए और मात्र ३-४ दिनों की बीमारी में ही आर्य समाज और शिक्षा-साहित्य जगत के एक उज्ज्वल नक्षत्र का अवसान हो गया, १८ नवम्बर १९९७ को डॉ० श्रीकान्त उपाध्याय जी का देहावसान हो गया। कलकत्ते और बंगाल का आर्य जगत डॉ० उपाध्याय की असीम ऊर्जा और प्राणवंत उपस्थिति से वंचित हो गया और आज भी यह कमी खलती है।

पूर्णता की ओर अग्रसर हम सब

— पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'

संसार के सृष्टिक्रम को चलाने की ईश्वर की अद्भुत व्यवस्था है। सृष्टिक्रम का प्रत्येक कार्य नियमित और निर्धारित समय से हो रहा है। ईश्वर की निश्चित व्यवस्थानुसार व विज्ञान के अनुसार सृष्टिक्रम चल रहा है। ज्ञान विज्ञान का समन्वय से संचालन हो रहा है। युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् थे, उन्होंने ईश्वरीय व्यवस्थानुसार व सृष्टि क्रमानुसार विज्ञान के अनुसार संसार को सत्यज्ञान कराया है।

पूर्णता को प्राप्त करना मानव जीवन का परम लक्ष्य है। न केवल चेतन समुदाय अपितु सृष्टि का प्रत्येक कण इसके लिये लालायित और गतिशील हैं। भौतिक जीवन में जिसके पास स्वल्प सम्पदा है वह अधिक की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील है। बड़े बड़े सम्राट अपनी इस अपूर्णता को पाटने के लिये दूसरे साम्राज्यों को लूटते रहते हैं। लगता है संसार का हर प्राणी साधनों की दृष्टि से अपूर्ण है और सभी पूर्णता को प्राप्त करना चाहते हैं।

इतिहास का विद्यार्थी अपने आपको गणित या विज्ञान में शून्य पाता है। भूगोल का संगीत में, वकील डाक्टरी में, यानि जीवन की विद्या में हर कोई अपूर्ण है और हर कोई अगाध ज्ञान का पंडित बनने को तत्पर दिखाई देता है। नदियाँ पूर्णता को प्राप्त करने के लिये सागर की ओर, वृक्ष आकाश की ओर, धरती भी स्वयं न जाने किस गंतव्य की ओर अधर में आकाश में भागी जा रही है। अपूर्णता की दौड़ में समूचा सौर मण्डल उससे परे का अदृश्य संसार में भी सम्मिलित है। पूर्णता प्राप्त करने की बैचेनी न होती तो सम्भवतः विश्व ब्रह्माण्ड में रत्ती भर भी सक्रियता न होती, सर्वत्र नीरव व सुनसान पड़ा रहता, न समुद्र उबलता, न मेघ बरसते, न वृक्ष उगते, न तारागण चमकते और न वह विराट की प्रदिक्षिणा में मारे मारे घूमते।

जीवन की साथकता पूर्णता प्राप्ति में है, इसका तात्पर्य यह हुआ है कि अभी हम अपूर्ण हैं और असत्य और अन्धकार में हैं। हमारे सामने मृत्यु मुंह बाये खाड़ी है। हर कोई अपने आप को अशक्त और असहाय पाता है, अज्ञान के अन्धकार में हाथ-पैर पटकता रहता है।

इस अपूर्णता पर जब कभी विचार आता है तब एक तथ्य सामने आता है और वह है परमात्मा अर्थात् एक ऐसी सर्वोपरि सर्वशक्तिमान सत्ता जिसके लिये कुछ भी अपूर्ण नहीं है वह सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा, नियामक और एकमात्र अपनी इच्छा से सम्पूर्ण सृष्टि में संचरण कर सकने की क्षमता में ओत प्रोत है।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णं मुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णं मादाय पूर्णमेवावशिष्यते । (उपनिषद् शान्ति पाठ)

ओं पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।

वस्नव त्वक्राणा वह इष्मूर्जशतक्रतो ॥ (यजु० ३-४९)

अर्थात् पूर्ण परब्रह्मा परमात्मा से पूर्ण जगत पूर्ण मानव की उत्पत्ति हुई । पूर्ण से पूर्ण निकाल देने पर पूर्ण ही शेष रह जाता है ।

जिस प्रकार नदी का एक किनारा समुद्र से जुड़ा रहता है और दूसरा किनारा उससे दूर रहता है, दूर रहते हुए भी नदी समुद्र से अलग नहीं है । नदी को जल समुद्र द्वारा प्राप्त होता है और पुनः समुद्र में मिल जाता है । जगत उस पूर्ण ब्रह्म से अलग नहीं है । मनुष्य उसी पूर्ण ब्रह्म से उत्पन्न हुआ इसलिए वह अपने में स्वयं पूर्ण है । यदि इस पूर्णता का भान नहीं होता, यदि मनुष्य कष्ट और दुःखों से त्राण नहीं पाता तो इसका मात्र कारण उसका अज्ञान और अहंकार में पड़े रहना ही हो सकता है । इतने पर भी पूर्णता हर मनुष्य की आन्तरिक अभिलाषा है और वह नैसर्गिक रूप में हर किसी में विद्यमान रहती है ।

प्रगति और पूर्णता का लक्ष्य बिन्दु देवत्व प्राप्त करना है -

क्षुद्रता और परिधि को तोड़ कर पूर्णता प्राप्त कर लेना हर किसी के लिये सम्भव है । मनुष्य की चेतनसत्ता में वह क्षमता मौजूद है, जिसके सहारे वह अपने स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीरों को विकसित कर देवत्व को प्राप्त कर सकता है । षट्चक्रों एवं पंच कोषों में समाहित विलक्षण क्षमताओं सिद्धियों का स्वामी बन सकता है । यही क्षमता को प्राप्त करना देवत्व की ओर जाना है । जबकि क्षमता की दृष्टि में वह उतना ही परिपूर्ण है जितना उसका सृजेता । इस चरम लक्ष्य की ओर ज्ञात अज्ञात रूप से हर कोई अग्रसर है ।

विकास इस सृष्टि की सुनियोजित व्यवस्था है । पदार्थ और प्राणी अपनी अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपने अपने ढंग से विकास कर रहे हैं । मनुष्य में देवत्व के उदय की यह संभावना विचार विज्ञान एवं ब्रह्म विद्या की परिधि में आती है । व्यक्तित्व का परिष्कार अध्यात्म जगत का परम पुरुषार्थ माना गया है ।

मैं के जानने में ही ज्ञान की पूर्णता है ।

मैं के साथ मेरा है । जो घमण्ड के साथ कहता है कि मैंने ऐसे किया, ऐसा कर दूंगा । इस नश्वर शरीर को शोभा नहीं देता । इस शरीर का वास्तविक मालिक ईश्वर है । हम दुनिया को जानने की कोशिश में लगे रहते हैं और संसार के साथ संबंध कायम करने में लगे रहते हैं । किन्तु स्वयं अपने को जानने का कभी प्रयत्न नहीं करते । हम इस साकार ईश्वर के अंग हैं साकार से हमारा अभिप्रायः प्रकृति के अंग है, यह सारा विश्व हमारा शरीर है । इस ज्ञान का नाम ही मैं है । मैं है वह परमात्मा सत्ता । इस सत्ता को जानना ही आस्तिकता है । अतः अपने आपको जानकर अपना स्वयं का ज्ञान होना आवश्यक है । मैं क्या हूँ ? मैं कौन हूँ ? मैं क्यों हूँ ? इन छोटे से प्रश्न का समाधान न कर सकने के कारण “मैं” को कितनी विषम विडम्बनाओं में उलझना पड़ता है ।

यदि मैं शरीर हूँ तो उसका अन्त क्या है ? लक्ष्य क्या है ? परिणाम क्या है ? मृत्यु - मृत्यु - मृत्यु ।

क्या वास्तव में “मैं” की मृत्यु हो जायेगी। “नहीं” क्योंकि जब तक शरीर में आत्मा रहती है तभी तक मनुष्य मैं का उच्चारण करता रहता है। जैसे ही आत्मा शरीर से पलायन हुई मैं का मेरे का सम्बोधन भी समाप्त हो जाता है।

आत्मा को जानिए

आत्मा ही जरा-मरण, भूख, प्यास समस्त भय सन्देह संकल्प-विकल्पों से रहित नित्य मुक्त, अजर, अविनाशी तत्व है। उसे जान लेने पर ही मनुष्य समस्त भय शोक, चिन्ता क्लेशों से मुक्त हो जाता है। आत्मा सर्व व्यापी नित्य तत्व है। आत्मा ही मानव जीवन का मूल सत्य है। आत्मा के पटल पर ही संसार और दृश्य जीवन का छाया नाटक बनता बिगड़ता रहता है।

अध्यात्म ब्रह्म (वृ० उ०) सर्वव्यापी विराट् आत्म सत्ता ही ब्रह्म है। ऐसा उपनिषद्कार ने अपनी अनुभूति के आधार पर कहा है। जिसने आत्मा को जान लिया उसने ईश्वर को जान लिया आत्म तत्व जब जगत देह इन्द्रिय तथा संसार के पदार्थों को प्रकाशित करता है। जो अनेक रूपों में दिखाई देता है। जैसे जल की बूंदें समुद्र पर गिरते समय अलग-अलग दिखाई देती है, किन्तु गिरने से पूर्व और गिरने पर वह अथाह सिन्धु के रूप में होती है।

सत-चित्त-आनन्द पूर्णता की ओर ले जाते हैं

सतः— परमात्मा के अनेक नामों में से एक नाम है, सच्चिदानन्द सत् यथार्थ—यथार्थता। यथार्थता का अर्थ सत्य को जानना, ऋत सत्य का ज्ञान होना और अपने जीवन को सत्य मार्ग अर्थात् ईश्वरीय आज्ञानुसार चलाना, सतपथ कहा जाता है।

चित्त :— अर्थात् चेतना ही मनुष्य का स्वरूप है। उसी के साथ कठिन और जटिल उलझनों का निर्माता एवं समाधान से जुड़ा हुआ है। सदैव सत्य की ओर चित्त को ले जाना ही समस्याओं का समाधान है।

आनन्द— जिसमें प्रति प्रसन्नता न्यून या अधिक आनन्द का आधार कारण रूप प्रकृति है बस प्रकृति से ऊपर उठ कर चित्त को सच्चिदानन्द में सदैव लगा देने पर ही परमानन्द की अनुभूति होती है।

अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें वेदों की शिक्षा देकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्ग पर चल कर पूर्णता की ओर जाने का मार्ग बताया है।

उपसंहार

मानव को सदा अपने को सत्य ज्ञान में अपूर्ण, सतकर्म में अपूर्ण, सत धर्म में अपूर्ण, सत व्यवहार में अपूर्ण, सत ईश्वर भक्ति में अपूर्ण समझना चाहिए। इससे उसमें अहंकार व अभिमान की निवृत्ति होती है और वह सत्य पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। वेद और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ और आर्य समाज के सिद्धान्त यही शिक्षा देते हैं।

वैदिक प्रचारक

गढ़ निवास मोहकमपुर,

देहरादून (उत्तराखण्ड)

मो० ९४११५१२०१९

हिमाचल के राजभवन में दो दिन

— ज्ञानेश्वराय

२५ मई २०१७ को हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्रीयुत् आचार्य देवव्रत जी से मिलने के लिए शिमला के राजभवन में पहुँचा। यह राजभवन लगभग १७५ वर्ष पूर्व तत्कालीन अंग्रेज शासकों ने अपने आवास के लिए बनाया था। इसमें दर्जनों कमरे हैं जो अत्याधुनिक, सभी सुविधाओं से युक्त हैं। इसमें १०० के लगभग सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी हैं, जो राजभवन में आने वाले अतिथियों, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपालों तथा अन्य विभिन्न विभागों के मंत्रियों अधिकारियों के आवास, भोजन आदि सभी प्रकार की सुविधाओं का पूरा पूरा प्रबन्ध करते हैं।

जैसा कि मैं पढ़ता व सुनता आया था कि राष्ट्रपति की तरह राज्यपाल भी एक सफेद हाथी की तरह या रबर स्टैम्प की तरह एक फालतू (अनावश्यक एम.एल.ए. मंत्रियों की) पदवी है जो मात्र हस्ताक्षर करने, प्रतिज्ञा दिलवाने, सभाओं में उपस्थित होने तक के ही काम करते हैं। अपनी और राजकार्यों में कोई प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं कर सकता है न कोई योजना/कानून विशेष बना सकता है। निष्क्रिय, अकर्मण्य व्यक्ति होता है जिस पर करोड़ों रुपये व्यय होते हैं। किन्तु दो दिनों में कुछ घण्टों की चर्चा विचार विमर्श, प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से जो जो बातें सामने आयीं उनको सुनकर मैं तो स्तब्ध/आश्चर्य चकित हो गया। उनकी कुछ बातों को जन सामान्य के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ। जिन्हें पढ़ सुनकर वे हर्षित होंगे, उत्साह व प्रेरणा मिलेगी।

आचार्य देवव्रत ने राजभवन में आते ही राज्य के समस्त उच्चाधिकारियों से परिचय प्राप्त करने, उनके कार्य विभाग, उनके दायित्व, अधिकार, समस्याएँ व प्रश्नोत्तर आदि से सम्बन्धित एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक से आचार्य जी को सहसा ही अधिकारियों की योग्यता, मानसिकता, भावनाओं से सम्बन्धित जानकारी मिल गयी। जैसा कि राजनीति में होता है, विरोधियों ने, विपक्षियों ने इस बैठक की प्रतिक्रिया में कपोल-कल्पित, मनगढ़न्त, मिथ्या धारणाएँ बनाकर समाचार पत्रों में प्रकाशित करा दी। किन्तु बैठक में विद्यमान बुद्धिमानों, निष्पक्ष अधिकारियों तथा समाज के प्रतिष्ठित सज्जनों ने इन विरोधियों के विरोध में आवाज उठाई तथा आचार्य की प्रशंसा की और धन्यवाद भी प्रकट किया।

राजभवन में आते ही एक महत्वपूर्ण कार्य यह किया कि अंग्रेजों के काल से चली आ रही शराब, माँस की पार्टी वाले भवन को उखाड़कर वहाँ पर एक सुन्दर, आकर्षक यज्ञशाला का निर्माण कराया उसके उद्घाटन के कार्यक्रम में भूतपूर्व तथा वर्तमान मुख्यमंत्रियों, विधानसभाओं के सदस्यों, मंत्रियों तथा अन्य समस्त राज्य के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया और उन्हें यजमान बनाया। वेदमंत्रों के शुद्ध पाठ द्वारा यज्ञ कराया तथा भजनोपदेशकों से भजन भी कराए। इसका राज्य की जनता पर इतना अद्भुत प्रभाव पड़ा कि आचार्य जी उनके लिए श्रद्धास्पद बन गये।

विरोधियों, स्वार्थियों अज्ञानियों ने इसका भी विरोध किया कि राजभवन में यज्ञशाला बनाना अनुचित है, यह धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध है तो उनको उत्तर दिया गया कि जब राष्ट्रपति भवन में मस्जिद, गुरुद्वारा बन सकता है तो राजभवन में यज्ञशाला क्यों नहीं बन सकता ? इस तर्क से विरोधी निरुत्तर

हो गये। आचार्य जी को जब भी खाली समय मिलता वे गाड़ी में फावड़ा, तसला, झाड़ू, बाल्टियां लेकर निकटस्थ गांवों में कर्मचारियों के साथ चले जाते और सफाई अभियान शुरू कर देते। गांव नगर की जनता और वहाँ के राज्य कर्मचारी भी आकर राज्यपाल जी के साथ सफाई कार्य में लग जाते। इसका भी जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा वहाँ सर्वत्र उनकी स्तुति, प्रशंसा होने लगी और आदर भाव भी होने लगा।

गुरुकुलीय शिक्षा से निर्मित, वैदिक विद्वान् निष्क्रिय, अकर्मण्य रहने वाले नहीं होते हैं वे कुछ न कुछ समाज, गांव, नगर, राज्य के लिए कार्य करते ही रहते हैं। आचार्य जी ने गाँवों का भ्रमण प्रारम्भ किया गाँव वालों से समस्या सुनी स्वयं भी अनुभव किया और अनुभव किया कि पर्याप्त वर्षा वाला प्रदेश होते हुए भी पानी सारा नीचे मैदानों में बह जाता है गांव में खेती के लिए पानी नहीं बचता है, न पीने के लिए। अतः आपने गांव वालों को सुझाव दिया कि जहाँ पर गांव के आस पास नीची भूमि है और वहाँ पर पानी एकत्रित करने के लिए चक डेम बनाये जाये जिससे सिंचाई के लिए पानी मिलेगा, पानी का स्तर ऊपर होगा और पीने के लिए भी पानी उपलब्ध होगा।

गाँवों में भ्रमण करते हुए लोगों को घरों के आगे पीछे फैक्ट्रियों के खाली स्थानों, पर्वतों पर वृक्ष लगाने की भी प्रेरणा देते हैं कम से कम एक वर्ष में एक व्यक्ति एक-एक वृक्ष लगाये तो अनायास ही लाखों, करोड़ों वृक्ष लग जायेंगे। गांव के लोगों को पुत्री उत्पन्न होने पर घर में गीत गाने, समारोह मनाने तथा गांव भर में मण्डली बनाकर वाद्ययंत्रों के साथ गीत भजन गाते हुए खुशी का प्रदर्शन करे। जिससे बेटियों के प्रति श्रद्धा, प्रेम बढ़ेगा। ऐसा सन्देश देते हैं। फैक्ट्री के स्वामियों को दुकानों के मालिकों को फैक्ट्री के आसपास साफ सफाई रखने, कूड़ा कचरा हटाने, वहाँ पर कचरा पेटी रखने का भी संकेत करते हैं, उनको बताते हैं कि सफाई होने से सुन्दरता बढ़ेगी, रोग भी समाप्त होंगे, अन्धों को भी प्रेरणा मिलेगी।

राजभवन में यदा-कदा देश भर के राज्यों के पदाधिकारी, राज्यपाल, मुख्यमंत्री आदि तथा राष्ट्रपति आदि भी अतिथि के रूप में आकर निवास करते हैं और राजभवन में शराब, माँस, मछली आदि की मांग भोजन के रूप में करते हैं। मुझे सुखद आश्चर्य लगा कि सभी को यहाँ तक कि राष्ट्रपति जी को भी माँस मछली परोसने हेतु स्पष्ट मना कर दिया, बाहर से मंगवाकर खाने की प्रार्थना को भी कठोर शब्दों में निषेध कर दिया कि ऐसा बिल्कुल नहीं होगा, मेरे लिए धर्म, संस्कृति की गरिमा बनाये रखना महत्वपूर्ण है, राज्यपाल का पद कोई महत्व नहीं रखता है। यह एक साहस निर्भीकता, आत्मबल का ही परिचायक है।

हिमाचल के राज्यपाल को देखकर देश के राज्यपालों के प्रति जो मेरी धारणा बनी हुई थी वह समाप्त हो गई कि ये मिट्टी के माधो होते हैं (Show Piece) होते हैं। किन्तु आचार्य जी तो किसी अन्य मिट्टी के बने हैं, उनके मन, बुद्धि, विचारों का निर्माण करने वाले चाहे माता-पिता हो या आचार्यगण वे उच्च प्रकृति वाले आदर्श व्यक्ति थे। उनकी आत्मा ऋषियों के दिव्य सन्देशों, सिद्धान्तों, विधि-विधानों नियमों से रंगी हुई है। वे परिस्थितियों के दास बनकर, उनसे तुच्छ स्वार्थों के लिए समझौता करने वालों में से नहीं हैं। वे अज्ञानी, स्वार्थी, अभिमानी, अधर्मी, पापी व्यक्तियों के आगे झुकने वालों में से नहीं हैं। उनके लिए धर्म, सत्य, न्याय, आदर्श महत्वपूर्ण हैं। धन, सत्ता, प्रतिष्ठा, सम्मान तुच्छ है। ऐसे दिव्य गुणों, भावनाओं, संस्कारों, कर्मों से युक्त आचार्य पर हमें गर्व है। हम उनकी प्रगति और उन्नत भविष्य की कामना करते हैं, जिससे समाज, राष्ट्र में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार हो सके।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ गुजरात

सूचना

आर्य समाज नरवा पीताम्बरपुर का २७वां वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम दिनांक ६ से ८ अक्टूबर तदनुसार शुक्र, शनि एवं रविवार को सम्पन्न हुआ जिसमें विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

१. अथर्ववेद पारायण यज्ञ - आचार्य शिवदत्त पाण्डेय वेद-वेदांग गुरुकुल विद्यापीठ के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ जिसमें ऋत्विक् वेदपाठी थे गुरुकुल के ब्रह्मचारी गण।

झण्डोत्तोलन - ग्राम नरवापीताम्बरपुर हज्जीपुर के प्रधान श्री अश्विनी कुमार मिश्र के कर कमलों से सम्पादित हुआ। यज्ञशाला एवं पण्डाल की सुन्दर व्यवस्था मंत्री श्री कृष्णमोहन मिश्र एवं श्री रवीन्द्र मिश्र के निर्देशन में सुसंपन्न हुई।

वाह्य प्रचार की कड़ी में दिनांक ६.१०.२०१७ को श्री लल्लन ब्रह्मचारी महा विद्यालय राजेसुल्तानपुर के प्रांगण में अपराह्न २ से ५ बजे तक सम्पन्न हुआ जिसमें लगभग ३ हजार छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में आचार्य शिवदत्त पाण्डेय एवं पं० त्रियुगीनारायण पाठक का उपदेश एवं भजनोपदेश हुआ दिनांक ७.१०.१७ को स्थानीय- ग्राम कल्यानपुर में अपराह्न २ से ५ बजे तक सभा का आयोजन किया गया जहां आचार्य शिवदत्त पाण्डेय एवं पं० त्रियुगी नारायण पाण्डेय के उपदेश हुए दिनांक ८.१०.१७ का अपराह्न का प्रोग्राम पण्डाल में सम्पन्न हुआ तथा शंका समाधान में आचार्य शिवदत्त पाण्डेय ने बड़े कुशलता पूर्वक विभिन्न शंकाओं का समाधान किया।

प्रतिदिन सायं ७ बजे से १० बजे तक विभिन्न कार्यक्रम एवं उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ दिनांक ८.१०.१७ को यज्ञ की पूर्णाहुति एवं दिनांक ९.१०.१७ को ऋषिलिंगर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में प्रधान श्री संतोष मिश्र, श्री कृष्णमोहन मिश्र कोषाध्यक्ष, श्री रामनारायण जायसवाल के अतिरिक्त श्री रवीन्द्र मिश्र, श्री पप्पू मिश्र, श्री इन्द्रमणि मिश्र, श्री विक्कू मिश्र, श्री सजीवन जायसवाल, श्री प्रदीप जायसवाल, श्री ओ३म् प्रकाश मिश्र, श्री डिम्पल मिश्र विशेष रूप से सक्रिय रहे।

विद्वानों के स्वागत सत्कार व्यवस्था में श्री संतोष मिश्र (राजू) श्री रामनारायण जायसवाल एवं श्री कृष्णमोहन मिश्र का परिवार हमेशा तत्पर रहा।

कार्यक्रम के संयोजक थे —

श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

आर्यसमाज कलकत्ता

१९ विधान सरणी, कोलकाता-६

वेद प्रचार की इसी कड़ी में सोमवार ९ अक्टूबर से बुधवार ११ अक्टूबर तक ग्राम कठमोरवा में प्रातःकाल चतुर्वेद शतक से ८ से ११ बजे तक एवं दोपहर २ बजे से ५ बजे तक सम्मेलन एवं सायं ८ से ११ बजे तक उपदेश एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम नेताजी सुभाष चन्द्र जूनियर हाई स्कूल कठमोरवा के प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य महासम्मेलन

दिनांक - 30 दिसम्बर शनिवार और 31 दिसम्बर रविवार 2017

स्थान - ऋषिकेश पार्क, आम्हस्ट्रीट, कलकत्ता-700006

विशेष आकर्षण

बंगला भाषा में प्रथम वेद भाष्य का प्रकाशन

आयोजक

आर्य समाज कलकत्ता

प्रधान - सुरेशचन्द्र जायसवाल

मन्त्री - दीपक आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल

प्रधान - श्रीराम आर्य

मन्त्री - तरुण दास

सम्पर्क सूत्र

पं० वेदप्रकाश शास्त्री

9007076899

पं० मधुसूदन शास्त्री

9832446464

पं० अपूर्वदेव शर्मा

9733792349

पं० सतीश चन्द्र आर्य

8420094002

मुनि प्रेमभिक्षु महाराज

9434369826

पण्डिता अर्चना शास्त्री

9434236432

द्रष्टव्य :- अवश्य 29-12-17 कलकत्ता आर्य समाज, 19 विधान सरणी में उपस्थित हों ।

साथ में हल्का विस्तर ले आएँ ।

(पृष्ठ ८ का शेषांश)

स्वामी का जीवन चरित (दिसम्बर अंक में) किशनगढ़ और जयपुर में

अजमेर से चलकर किशनगढ़ में पड़ाव – जब अजमेर से चले तो पंडित वृद्धिचन्द्र जी एक बैल गाड़ी में स्वामी जी को और एक ऊँट पर उनका सामान रखकर उन्हें किशनगढ़ में लाये । पंडित शिवनारायण वैद्य जो उनसे विद्या पढ़ता था वह भी साथ आया, शेष सब लौट गये । जब किशनगढ़ में मैं वृद्धिचन्द्र उनको लाया तो शुभ-सागर के तट पर उतारा था । यहां कृष्णवल्लभ जी जोशी दायमा ब्राह्मण जो एक अच्छे विद्वान् पंडित थे और एक महेशदास ओसवाल स्वामी जी से बहुत प्रीति करते थे । यह महेशदास संस्कृत और भागवतादि के विशेष ज्ञाता थे और यह यहां की माई जी साहबा के दीवान थे । एक दिन महेशदास के यहां से भोजन भी आया था ।

(क्रमशः....)

आर्य समाज कलकत्ता के प्रकाशन

पुस्तक विक्रेता, आर्य संस्थाओं, उपदेशकों को ४० प्रतिशत की छूट दी जाती है।

पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१. युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश-संदर्भ दर्पण (ऐतिहासिक संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश की यात्रा का दस्तावेज)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
२. स्वामी दयानन्द का राजनीति दर्शन (स्वामी दयानन्द के राजनीति दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन)	डॉ० लाल साहेब सिंह	५०.००
३. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज की देन (उन्नीस उत्कृष्ट निबंधों का संग्रह)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय द्वारा सम्पादित	१५.००
४. त्रैतवाद का उद्भव और विकास (त्रैतवाद का उसके उद्भव और विकास के वैशिष्ट्य को स्पष्ट करने वाला दर्शन का शोधपूर्ण ग्रंथ)	डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री	२०.००
५. उपनिषद् रहस्य (ईश केन और प्रश्न उपनिषदों की सारगर्भित व्याख्या)	महात्मा नारायण स्वामी "सरस्वती"	२०.००
६. श्री श्री दयानन्द चरित	श्री सत्यबन्धुदास	१०.००
७. महर्षि दयानन्द की देन (निबंधों का संग्रह)	आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा प्रकाशित	३०.००
८. धर्मवीर पं० लेखराम	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	५०.००
९. आनन्द संग्रह (स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज के उपदेशामृत)	वीतराग स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज	२५.००
१०. भाई परमानन्द (बलिदानी वंश के कुलदीपक की अमर कहानी)	श्री बनारसी सिंह	१०.००
११. धर्म का आदि स्रोत	पं० गंगाप्रसाद जी	३०.००
१२. संकल्प सिद्धि (विचारों के संकल्प विकल्प का अनोखा चिन्तन)	स्वामी ज्ञानाश्रम	३०.००
१३. ज्योतिर्मय (श्रीयुत् टी. एल. वास्वानी द्वारा लिखित (Torch Bearer)) का हिन्दी अनुवाद	टी.एल. वास्वानी	३०.००
१४. वेद-वैभव	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१५०.००
१५. कर्मकाण्ड	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१०.००
१६. स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान	ले० सत्यप्रिय शास्त्री	५०.००
१७. आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	८०.००
१८. मेरे पिता	इन्द्र विद्यावाचस्पति	५०.००
१९. वेद और स्वामी दयानन्द	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२०. व्यतीत के यश की धरोहर (महासम्मेलनों के संस्मरणात्मक आकलन)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	६०.००
२१. Torch Bearer	टी० एल० वास्वानी	३५.००
२२. पं० गुरुदत्त लेखावली	मुनिवर पं० गुरुदत्तजी 'विद्यार्थी'	२५.००
२३. प्रार्थना प्रवचन	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	५०.००
२४. सन्ध्यारहस्य एवं सन्ध्या अष्टांग योग	प्रो० चमूपति एवं स्व० आत्मानन्द (एक जिल्द)	३०.००
२५. बंगाल शास्त्रार्थ	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२६. वेद में गोरक्षा या गोवध	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	५.००
२७. वेद रहस्य	महात्मा नारायण स्वामी जी	३५.००
२८. वेद	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००
२९. राज प्रजाधर्म प्रबोधभाष्य	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
३०. वेद-वीथिका	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल द्वारा प्रकाशित
तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित।